International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सांख्य दर्शन में जगत–स्रष्टा के रूप में प्रकृति के गुण एवं स्रष्टा कण (गॉड–पार्टिकल) की भूमिका : एक अनुशीलन

नवल किशोर
शोध छात्र
दर्शनशास्त्र विभाग,
बी.आर.ए. बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर

सांख्यीय विकासवाद को प्रकृति–परिणामवाद या प्रकृति विकासवाद के नाम से जानते हैं। प्रकृति को प्रसवधर्मिणी कहा गया है, समस्त जगत प्रकृति का ही परिणाम है। प्रकृति सत्त्व, रजस और तमस् इन तीनों गुणों की साम्यावस्था है।[1] सत्त्वगुण हल्का प्रकाशक, रजस् चंचल्य अतएव प्रवर्त्तक एवं तमस् भारी अतएव नियामक माना गया है।[2] सत्त्व गुण शुद्धता का प्रतीक है, इससे आनंद और ज्ञान की उत्पत्ति होती है। इसका वर्ण श्वेत माना गया है। ''उपष्टम्भकं चलं च रजः[3] रज गुण अशुद्धि का प्रतीक है। गुरू वरणकमेव तमः तमोगुण अंधकार तथा अज्ञान का प्रतीक है और यह मोह पैदा करता है।

जिस प्रकार दीपक में तेल, बत्ती और ज्वाला परस्पर विरोधी होते हुए भी मिलकर प्रकाश करते हैं उसी प्रकार ये तीनों गुण परस्पर विरोधी होते हुए भी मिलकर पुरुष के प्रयोजन की सिद्धि के लिए कार्य करते हैं। उदाहरणार्थ सत्त्वगुण की प्रतीक पतिव्रता सुन्दरी अपने प्रति को सुखी, सपत्नी को दुःखी एवं अन्य कामी पुरुष को मोहित करती है। ''अमी–हलाहल–मदभरे श्वेत–श्याम रतनार। नियत–मरत झुकि–झुकि परत जेहित चितावत इक बार।।[4]

पुरुष संयोग से गुणक्षोभ, गुणक्षोभ से विरूप परिवर्तन एवं विरूप परिवर्तन से सृष्टि का प्रारंभ होता है। विरूप परिवर्तन वह है जब एक वर्ग के गुण का रूपान्तरण दूसरे वर्ग के गुण में होता है। सांख्यिकी मान्यता के अनुसार सृष्टि के मूल स्रष्टा प्रकृति के गुण है। ये वे स्रष्टा कण है जिससे समस्त जगत की उत्पत्ति संभव होती है।

''प्रकृते : क्रियमाणानि गुणैः कर्माणि सर्वशः।

अहंकारविमूढ़ात्मक कर्ताहमिति मान्यते।।[5]

जहां तक सृष्टि की बात है वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जगत परमाणुओं का संयोजन है जो स्थान भौतिक रूप से एक परमाणु का है, वही स्थान दार्शनिक रूप से सांख्य दर्शन में प्रकृति का है। इसका अर्थ यह हुआ कि जिस प्रकार से भौतिक जगत् की संरचना वैज्ञानिक दृष्टिकोण से परमाणुओं से हुई है, ठीक उसी प्रकार से सांख्य दर्शन के अनुसार समस्त जगत् का आविर्भाव प्रकृति से हुआ है। भौतिक जगत् के स्रष्टा परमाणु सूक्ष्म, नित्य, परिणामी हैं, ठीक उसी प्रकार प्रकृति भी सूक्ष्म, नित्य एवं परिणामी हैं।

जिस प्रकार से परमाणु में इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन तथा न्यूट्रॉन विद्यमान रहते हैं, ठीक उसी प्रकार प्रकृति में रजो,तमो एवं सत्व गुण विद्यमान रहते है। जहाँ एक परमाणु के केन्द्र में प्रोटॉन एवं न्यूट्रॉन विद्यमान होते हैं एवं इलेक्ट्रॉन परिधि पर अपने कक्ष के चारों ओर परिक्रमा करता रहता है, ठीक उसी प्रकार प्रकृति के केन्द्र में

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 1, January - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सत्त्वगुण, तमागुण विद्यमान रहते हैं एवं रजो गुण उपष्टम्भक प्रवृत्ति से युक्त होने के कारण हमेशा इलेक्ट्रॉन की भाँति सक्रिय रहता है। रजोगुण के कारण प्रकृति की वैषम्यावस्था उत्पन्न होता है, फलतः गुणक्षोभ की स्थिति उत्पन्न होती है एवं जगत् का आविर्भाव होता है। भौतिक जगत् की सृष्टि में वैज्ञानिक तौर पर जो स्थान परमाणु, इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन एवं न्यूट्रॉन का है ठीक वही स्थान सांख्य दर्शन में सृष्टि के रूप में प्रकृति, रजोगुण, तमोगुण एवं सत्त्वगुण का है। अतः वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सृष्टि के स्रष्टा–कण (गॉड पार्टिकल) जिस प्रकार से परमाणु, इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन एवं न्यूट्रॉन को कहा जाता है, उसी प्रकार सृष्टि के स्रष्टा कण (गॉड पार्टिकल) के रूप में प्रकृति, रजोगुण, तमोगुण एवं सत्त्वगुण को दार्शनिक रूप से स्वीकार करने में कोई संदेह नहीं दिखता।

संदर्भ सूची :

1. सां. सू0 1.61
2. सां0 का0 13
3. वही0
4. चन्द्रधर शर्मा, पृष्ठ 145
5. गीता 3/7